International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-07-2021, Accepted: 11-08-2021, Published: 28-08-2021
Volume 7; Issue 4; 2021; Page No. 139-142

हिन्दी युवा लेखिकाओं की प्रमुख कहानियों में चित्रित स्त्री जीवन का यथार्थ

डॉ. तबस्सुम खान[1], आशा चंदर बारेकर[2]
[1] हिन्दी–विभागाध्यक्ष, श्री सत्यसाईं विश्व विध्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] हिन्दी–विभाग, श्री सत्यसाईं विश्व विध्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
स्त्रियों की स्वतंत्रता का जो शोर निरंतर मच रहा है। साथ ही जिन सांस्कृतिक खतरों का भय दिखलाया जा रहा है। वह सब मात्र कागज तक सीमित है। इन कहानियों में एक ओर स्त्रियों को घुटते–सिसकते एवं उसके संघर्षों का अंकन किया जा रहा है। दूसरी और विवाह संस्था को नकार कर स्त्रियां ऐसी संबंधों में अपनी स्वतंत्रता ढूंढ रही है। सदियों से चली आ रही स्त्री शोषण की मानसिकता पर आज के ऐसे संबंध उसकी स्वतंत्रता एवं उसके बदलते वातावरण का आकलन करती अनेक कहानियां लिखी जा रही है। इसी प्रकार स्त्री की बदलती स्थितियों के बीच आकांक्षा पारे की कहानी ''तीन सहेलियां, तीन प्रेमी, प्रेम, स्वतंत्रता एवं स्त्री पुरूष संबंधों की पड़ताल करती है। कहानी में तीनों सहेलियों यके प्रेमी विवाहित है। उन्हें विवाहेत्तर संबंधों से कोई गुरेज नहीं है। क्योंकि उन्हें उम्र के इस पड़ाव पर कुंवारे लड़के मिलने की संभावना नहीं लगती है। इस संदर्भ में एक सहेली कहती है, ''समझने की कोशिश करो बच्ची, हम जिंदगी मांग रही है। उनकी जिंदगी। सामाजिक जिंदगी, आर्थिक जिंदगी, इज्जत की जिंदगी। वह जिंदगी हमें कोई क्यों देगा। इसलिए नहीं कि, हम काबिल नहीं हैं..... हिस्सा बन सकते हैं न ही हिस्सेदार।'' देह की आवश्यकता उम्र देखकर नहीं आती है। कहानी में तीनों सहेलियां एकाकीपन की ऊब एवं घुटन से भरी हुई है। यह कहानी संबंधों के अलग–अलग चेहरों के दर्शन कराती है। हमारे समाज में अपनी शर्तों पर जीवन जीने की विचारधारा का परिणाम इस प्रकार के संबंधों के रूप में आ रहा है।
हमारे समाज में स्त्री शोषण का एक घृणित अध्याय विधवा महिलाओं के प्रति भी लिखा गया है। शोषण, भेदभाव एवं अनेक समस्याओं का सामना विधवाओं को करना पड़ता है। विधवा महिलायें मारपीट, भावात्मक उपेक्षा, लैंगिक दुर्व्यव्हार, यौन–शोषण, सम्पत्ति के हिस्से से वंचित आदि का शिकार होती है। युवा विधवाओं को अधेड़ विधवाओं की तुलना में अधिक शोषण एवं उत्पीड़न को सहन करना पड़ता है। विधवा स्त्री की विवशता एवं उनके साथ होने वाले शोषण के अनेक चित्र मनीषा कुलश्रेष्ठ ने कहानी ''रंग–रूप–रस–गन्ध'' में उकेरा है।

मूलशब्द: हिन्दी युवा लेखिकाओं, चित्रित स्त्री जीवन

प्रस्तावना
कथा साहित्य में कहानी विधा सबसे पुरानी एवं लोकप्रिय विधा के रूप में जानी जाती है। हिन्दी कहानी को गल्प, आख्यायिका, कथा, किस्सा आदि अनेक नामों से सुशोभित किया जाता रहा है। हिन्दी कहानी के विकास क्रम की प्रक्रिया प्रत्येक बार रोचकपूर्ण, अचम्भित कर देने वाली रही है। हिन्दी कहानी के विकास में जितना योगदान पुरूष कथाकारों का रहा उतना ही महत्व स्त्री लेखिकायें भी रखती है। प्रत्येक समय में युवा कहानीकारों ने कहानी विधा में अपना योगदान दिया है। युवा कहानीकारों में अनुभव का अभाव भले ही रहा हो किन्तु अपने समय में होने वाली बदलावों पर वह सदैव सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं। इन युवा कहानीकारों में स्त्री लेखिकाओं की मौजूदगी अधिक महत्व रखती है। हिन्दी कहानी के अनेक युवा लेखक एवं लेखिकाऐं अपनी रचनाशीलता के कारण आकर्षित एवं प्रभावित करते है। कहानी सदैव से ही अपने समय को व्यक्त करने का सरल एवं सशक्त माध्यम रही हैं। युवा रचनाकारों बदलते समय एवं समाज का यथार्थ चित्रण अपनी कहानियों में किया है। युवा लेखिकाओं ने स्त्री जीवन के बदलते रूप को न सिर्फ अपनी कहानियों में उकेरा बल्कि स्त्री जीवन के कटु सत्यों का अंकन भी निःसंकोच किया है। स्त्री लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री जीवन से जुड़े विषय मुख्य रूप से मिलते है। इन विषयों में विकृत कामुकता के साथ, कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, कामकाजी महिलाओं का यौन उत्पीड़न आदि प्रमुख है। हिन्दी युवा लेखिकाओं में मुख्य रूप से मनीषा कुलश्रेष्ठ, कविता, वंदना राग, नीलाक्षी सिंह, अल्पना मिश्र, पंखूरी सिन्हा, प्रत्यक्षा आदि का नाम लिया जा सकता है। इनकी कहानियों में अपने समय की अनुगूंज है, समय से टकराती स्त्री का संघर्ष है एवं समाज का घृणित रूप दिखाई देता है। नब्बे के दशक के आर्थिक बदलावों ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया जिससे स्त्री जीवन भी अछूता नहीं रहा। इन बदलावों की पदचाप स्त्री लेखिकाओं की कहानियों में साफ सुनाई देती है। स्त्री लेखिकाओं की कहानियां वर्तमान समय से हमारा साक्षात्कार कराती है। बदलते समय के अनेक ज्वलन्त प्रश्न इन स्त्री लेखिकाओं की कहानियों में उठाये गये है। इसके साथ विवाह संस्था से आगे निकलते हुए सहजीवन (लिव इन रिलेशनशिप) की बात की जा रही है। इस तरह के विषय भी कहानियों में स्थान पा रहे है। एक रचनाकार के लिए यथार्थ का वर्णन करने के लिए कोई निर्धारित सूत्र नहीं होता है। कहानी की गतिशीलता तो उसी प्रकार होती है जिस प्रकार से जीवन अपने समय के संकटो एवं चुनौतियों से संघर्ष करते हुए चलता रहता है।
समकालीन स्त्री कथा लेखन में स्त्रियों के समानता एवं उसके अधिकारों के प्रति प्रतिबद्ध होकर कहानी में स्थान देने के साथ स्त्रियों को दोयम दर्जे पर रखने का प्रखर विरोध भी दिखाई देता है। इस सदी में हिन्दी के स्त्री कथा लेखन से संबंधित जिन कहानियों पर चर्चा की जा रही है वह कहानियां स्त्री जीवन के विविध पहलुओं, स्त्री अस्मिता को नई पहचान देते हुए नई संभावनाओं, संवेदनाओं एवं अनुभवों का चित्रण बड़ी ही सार्थकता के साथ करती है। स्त्री सदैव से ही अपने आत्मसम्मान, अस्तित्व एवं अधिकारों के प्रति संघर्ष करती रही है। आज स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां हासिल कर रही है किन्तु ज्ञान एवं विचार से परिपूर्ण साहित्य क्षेत्र में अधिकांशतया एक मनुष्य के रूप में स्थापित करने की अपेक्षा मात्र वस्तु के रूप में उसकी छवि गढ़ी गयी। वर्तमान कहानियों में स्त्री की छवि देखें तो वह मात्र

विद्रोहिणी की नहीं बल्कि उसके विद्रोह में छिपे उन आकांक्षाओं का अक्स भी है, जो स्त्री में उत्सुकता, जिज्ञासा एवं जुनून की वकालत करता है। स्त्री मात्र देह नहीं अपितु उसकी मनःस्थितियां, भाषा, अर्थव्यवस्था, सामाजिकता आदि सभी कुछ पितृसत्ता के जाल में घिरा दिखाई देता है। आज स्त्री पहले की अपेक्षा अधिक विश्वासी एवं स्वतन्त्र दिखाई देती है। लेकिन इसका यथार्थ पक्ष देखना भी अति आवश्यक है। स्त्री स्वतन्त्र तो दिखाई देती है। बेशक, आज स्त्री की समाज भी भागीदारी बढ़ी है। लेकिन स्त्री को जाल में बुने जाने की प्रक्रिया का अंत नहीं हुआ हैं। बदलते समय में स्त्री के अधिकारों को मजबूती मिली है लेकिन, उसका संघर्ष और भी बढ़ा है। स्त्री अर्थात् आधी दुनिया कही जाती है। वह पुरूष समाज से थोड़ा भी कम नहीं है। इसके पश्चात् भी स्त्री पुरूष आबादी में असंतुलन देखने को मिलता है। कन्या भ्रूण हत्या, दहेज के लिए स्त्री की हत्या एवं प्रताडना एवं बलात्कार जैसी अनेक घटनायें प्रत्येक वर्ष बढ़ती जा रही है। यह घटनायें स्त्री स्वतन्त्रता एवं सुरक्षा के प्रति प्रश्नचिन्ह की तरह खड़ी हो जाती है। हमारे समाज की स्त्रियों की स्थिति का आकलन करना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। स्त्री बिना समाज की कल्पना करना भी असंभव है। स्त्री के अभाव में समाज को देखना निरर्थक एवं असंभव लगता है। साहित्य की दृष्टि से स्त्री के प्रत्येक पक्ष को समझना सरल नहीं है। आदिकाल से ही पुरूषों के पास स्त्री की अपेक्षा अधिक समय एवं स्वतन्त्रता रही है। मातृत्व का दायित्व संभालती स्त्रियों के पास यह दोनों चीजें (समय एवं स्वतन्त्रता) सीमित थी। जिस प्रकार समाज की रचना होती गई, पुरूषों का वर्चस्व स्थापित होता गया। समाज के इस विभाजन के प्रति स्त्रियों की आवाजें धीरे–धीरे प्रखर होने लगी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् नारीवादी आंदोलनों की आवाजें तेज हुई। स्त्री लेखिकाओं के आगमन भोक्ता के यथार्थ की अवधारणा तेज हुई।

समकालीन समय की अनेक कहानियां स्त्री जीवन के विविध रंगों एवं पहलुओं को उजागर करती है। स्त्री जीवन के संघर्ष, उसकी जटिलतायें, उसकी प्रगति एवं निरंतर चुनौतियों से जूझता उसका व्यक्तित्व किन कड़वे अनुभवों से गुजरता है। उसका साक्षात्कार वर्तमान कहानियों में लक्षित होता है। स्त्री मन की झलक दिखाती विविध कहानियां ऐसा संसार रचती हैं जिसमें स्त्री जीवन में आये परिवर्तन का चित्रण भी होता है और उसका विश्लेषण भी। स्त्री मन की आंतरिक चेतना का विद्रोह बनकर उभरी मनीषा कुलश्रेष्ठ की ''कठपुतलियां'' कहानी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। कहानी बीहड़ रेगिस्तान के परिवेश में ढली गरीब एवं अपेक्षाकृत पिछडे ''ढोली समुदाय'' की रहने वाली सुगना के इर्द–गिर्द घूमती है। नायिका सुगना के माध्यम से इस तरह समुदाय में रहने वाली स्त्रियों की स्थिति का आकलन किया गया है। आज भी अनेक कुरीतियां, रिवाजों, परम्पराओं के नाम पर रूढ़िवादी मानसिकता एवं अंधविश्वासों का पोषण समाज में हो रहा है। यह कहानी इसी मानसिकता द्वारा शोषण का शिकार होती स्त्री जीवन पर आधारित है। इस कहानी में इसी शोषण के कई पक्ष दिखाई देते है। ''तेरह साल की सुगनाबाई का ब्याह तीस बरस के अपाहिज और विधुर कठपुतली वाले रामकिशन से हो गया। सुगना के सपने में पैर कटी कठपुतलियां आने लगी।''

बेमेल विवाह आज भी इन समुदायों में हो रहे है। इस पर प्रश्न उठाती यह कहानी स्त्री के सशक्त होने की धारणा को नये सिरे से पड़ताल करने की आवश्यकता के सवाल पर छोड़ जाती है। सुगना के गर्भवती होने की घटना एक चक्रवात की भांति उसके जीवन में प्रवेश करती है। इसके पश्चात् पंचों द्वारा सुगना की अग्निपरीक्षा की मांग करना जैसी घटनायें यह सोचने पर विवश करती है कि बदलते समय की परिधि में आज भी ऐसी रूढ़िवादी मानसिकता एवं परम्पराओं का चलन निर्बाध रूप स`चल रहा है। इसका विरोध करने की अपेक्षा सुगना का अग्निपरीक्षा देना स्त्री की बदलती दशा पर प्रश्नचिन्ह की तरह है। कानून एवं न्याय व्यवस्था का माखौल उड़ाती यह जातिगत पंचायते अपने स्वार्थ एवं झूठी प्रतिष्ठा के चलते अनेक स्त्रियों की बलि चढ़ाती रही है। इन पंचायतों के समक्ष रामकिशन (सुगना का पति) की विवशता, तमाशा देखते गांव के लोग अपनी मौन स्वीकृति से इस शोषण को बढ़ावा ही देते दिखाई देते है।

इसके विपरीत कविता की कहानी ''उलटबांसी'' परम्परागत एवं रूढ़िवादी विचारधारा को तोड़ती है। स्त्री मन की संवेदनाओं को उजागर करती कविता की यह कहानी रूढ़िवादी सोच एवं मूल्य संरचनाओं द्वारा पोषित संस्कृति को चुनौती देती दिखाई देती है। जहां ''कठपुतलियां'' की नायिका सुगना नवयौवना है वही ''उलटबांसी'' की कहानी मुख्यतः उम्र की अंतिम पडाव की ओर बढ़ती स्त्री पर केन्द्रित है। उम्र के इस पडाव पर अकेलेपन के संत्रास से गुजरती स्त्री विवाह कने का निर्णय लेती है। हमारे समाज में पुरूष किसी भी उम्र में विवाह कर सकते है। इस बात का विद्रोह पुरूषों को झेलना नहीं पड़ता है किन्तु एक स्त्री का यह निर्णय समाज को बाद में सर्वप्रथम परिवार को ही अखरने लगता है। लेखिका इस संदर्भ में लिखती है कि ''जिस उम्र में लोग तीर्थ करते है। भक्ति में मन रमाते हैं उस उम्र की नाती–पोतों वाली औरत का ब्याह रचना आज तक नहीं सुनी थी यह अनहोनी।'' यह कहानी स्त्री को स्वतंत्र रूप से मानवीय दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करती है। पुरूषों द्वारा निर्धारित स्थान में से एक मां का स्थान है। इसे स्त्रियों की पूर्णता का पर्याय समझा जाता है। जिस समर्पण, प्रेम, त्याग, दया की मूर्ति के रूप में स्त्री को सीमित कर दिया गया है उसके अंतर्गत मां, बहन, पत्नी, पुत्री आदि भूमिकायें निर्धारित होती है। इन भूमिकाओं में कैद किये जाने में सभी यह भूल जाना चाहते है कि, वह सर्वप्रथम एक स्त्री है। जिसमें संवेदना, लालसा एवं आकांक्षाओं जैसी अनेक अनुभूतियों का सागर हिलोरें मारता रहता है। लेकिन यह केवल स्त्री के लिए एक स्वप्न बनकर रह जाता है। कहानी की नायिका अपूर्वा (अप्पू) अपनी मां द्वारा लिये गये निर्णय को स्वीकार कर अपना समर्थन देते हुए कहती है कि ''अगर मां शादी कर रही है तो वह अपने अकेलेपन से ऊबकर, देह की भूख से हारकर नही।''

एक स्त्री से सदैव अथाह धैर्य की उम्मीद की जाती है विशेषकर जब वह मां होती है। रूढ़िवादी एवं परम्परागत सोच एवं संस्कारों से निकलना सरल नहीं है। मां के विरोध के स्वरों में बेटे–बहुओं एवं दामाद की पुरूषवादी सोच का प्रतिरोध निःसंदेह बेटी एवं पोती अर्थात् स्त्री की नई पीढी द्वारा ही संभव है। अपनी संतानों की उपेक्षा का शिकार होती मां अपने जीवन के अंतिम क्षणों में एकाकीपन, ऊब के स्वीकार्य के विपरीत अपने लिये गये निर्णय में स्त्री विश्वास की एक सशक्त दुनिया दिखाई पड़ती है।

इसके अतिरिक्त नीलाक्षी सिंह की कहानी ''प्रतियोगी'' बाजारीकृत होते समाज में अपनी स्थितियों को सजगता से टटोलती एक ऐसी स्त्री दुलारी की है जो सदैव पितृसत्ता के दायरे में रही किन्तु अपने घर की चौखट को लांधने व अपनी अस्मिता की तलाश करते हुए अपनी एक अलग पहचान स्थापित करती हैं। दुलारी के परिचय के संबंध में लेखिका लिखती है कि ''फूलदार लाल वाली रो रही। वह थी दुलारी। दुलारी पहले दुलारी थी छक्कन प्रसाद की पत्नी बाद में।'' दुलारी भले ही हिसाब किताब में कमजोर थी किन्तु वह ग्राहकों के सामने इस प्रकार व्यवहार करती जिससे उसकी चाह पाना ग्राहकों के लिए असंभव था। स्त्री संघर्ष की नई चुनौतियों की ओर संकेत करती कहानी स्त्री जीवन का जो चित्र इस कहानी में उकेरा गया है वह वर्तमान में स्त्री जीवन की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं चुनौतीपूर्ण हो गया है। यह कहानी स्त्रियों में निरंतर बढ़ती आत्मनिर्भरता की तड़प को बड़ी ही शिद्दत से महसूस करती है। दुलारी की पहचान उसके नाम एवं काम से है। नाकी छक्कन प्रसाद की पत्नी के

रूप में।

स्त्री संघर्ष की एक अलग कहानी ''छावनी'' में ''बेघर'' देश की रक्षा करने वाले सैनिकों के परिवारों का अन्तर्नाद है। अल्पना मिश्र की यह कहानी स्त्री जीवन की एक ऐसी त्रासदी को नायिका मिसेज कुमार के माध्यम से अभिव्यक्त करती है जिसमें विवशता, विस्थापन का भय व्याप्त है।

यह कहानी कारगिल युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है। जिसमें युद्ध पर गये सैनिकों एवं आर्मी अफसरों के परिवारों की अंतहीन समस्याओं का यथार्थ उपस्थित था। कहानी में मेजर कुमार के युद्ध पर जाने के पश्चात् मिसेज कुमार के संघर्ष की शुरूआत होती है। मिसेज कुमार के साथ अन्य सैनिक और अफसरों के परिवारों को सरकारी घर खाली कराकर सिविलियन्स के बीच घर खोजने का आदेश जारी कर दिया जाता है। दूसरी ओर लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ कही जाने वाली भी ऐसे परिवारों एवं मजबूरों का पूर्णतया लाभ उठाने को तत्पर रहती है। युद्ध में शहीद सैनिकों के परिवारों को दिया जाने वाला मुआवजा सरकारी तंत्र द्वारा ठीक प्रकार से क्रियान्वयन न किये जाने के कारण सैनिक परिवार अभाव एवं गरीबी में जीने को विवश रहते है। अनेक शहीद के परिवारों को पैट्रोल पम्प रजिस्टर तो होते है किन्तु उन्हें प्राप्त नहीं हो पाते है। सरकारी नियमों की अवहेलना करते हुए शहीदों के परिवार की दशा का चित्रण करते हुए लेखिका लिखती है कि ''एक शहीद की बहन नेताओं के आगे आत्मदाह करने की कोशिश कर रही है। उसके भाई के नाम से सरकार ने पैट्रोल पम्प दिया है जिसे कोई सरकारी कारिन्दा चलाता है। पैसा मांगने पर बेइज्जत करता है। कहानी में इस विषय को बड़ी ही गंभीरता के साथ उठाया गया है। मेजर कुमार के युद्ध में जाने के पश्चात् मिसेज कुमार अनेक समस्याओं से जुझती है। मिसेज कुमार का यह संघर्ष भी किसी युद्ध से कम नहीं था। लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका जितनी आवश्यक है उतनी ही महत्वपूर्ण भी। मीडिया ही समाज के वास्तविक सत्य का अन्वेषण करने के प्रति उत्तरदायी होती है। ऐसे में मीडिया भी अपनी स्वार्थता एवं लाभ के लिए अपनी जिम्मेदारियों से विमुख हो जाये तो यह स्थिति बेहद गंभीर और चिंताजनक है। मीडिया द्वारा शहीदों पर लाभ उठाने के संदर्भ में लेखिका लिखती है कि ''तमाम अखबार और पत्रिकायें शहीदों के नाम पर आम जनता से चन्दा वसूली में लगी है। अन्त में मेजर कुमार की कोई खबर न मिलने से मिसेज कुमार गांव जाने का निर्णय लेती है। साथ ही अनेक प्रश्नों को अपने पीछे छोड़ जाती है। युद्ध में शहीद होने वाले सैनिकों के परिवारों की उपेक्षा, सैनिकों के सलामत होने की आशंका, युद्ध के वातावरण में उपजते भय आदि द्वारा एक युद्ध छावनी के भीतर भी निरंतर चलता रहता है।

युवा कथाकार पंखुरी सिन्हा की कहानी ''किस्सा–ए–कोहनूर'' वर्तमान समय के चकाचौंध में खोये युवाओं पर केन्द्रित है। कहानी की नायिका जयन्ती महापात्र इक्कीसवीं सदी की जागरूक स्त्री है। जो विवाह संस्था के बाहर अपने लिये एक सफल स्थान तलाश करती है। स्त्री जीवन की सार्थकता विवाह तक सीमित नहीं है। इसके विपरीत जीवन के प्रत्येक भाग में वह अपनी उपस्थिति मजबूती से स्थापित करना चाहती है। जयन्ती महापात्र भी एक युवा कामकाजी स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो दिल्ली शहर की सॉफ्टवेयर कम्पनी में कार्यरत् है। वह जटिल से जटिल जावा प्रोग्राम डिजायन के संदर्भ में महारत रखती है। जयन्ती अपनी योग्यता के चलते अमेरिका जाने का अवसर प्राप्त करती है। वह इस अवसर की उपयोगिता से भलीभांति समझती है। वह यह भी ठीक प्रकार जानती है कि अगर उसने यह अवसर जाने दिया तो इस अवसर का लाभ कोई अन्य उठा लेगा। माता–पिता के विरोध एवं विवाह पश्चात् जाने से शर्त से जयन्ती का विरोध प्रखर हो उठता है। चूंकि जयन्ती वर्तमान समय की योग्यपूर्ण, सफल एवं जागरूक स्त्री है जो अपने निर्णय लेने एवं उस पर अडिग रहने का सामर्थ्य रखती है। लेखिका लिखती है कि ''जयन्ती महापात्र पूर्णतः इस युग की पैदाइश है। आजादी की आधी शताब्दी से भी ज्यादा बाद की, हरित क्रान्ति और पंचवर्षीय योजनाओं के भी बहुत बाद की, जब अचानक विदेशी गाडियों, विदेशी पत्रिकाओं, विदेशी टेलीविजन चैनलों की चमक–दमक से भारतीय बाजार और घर–बार की आंखे चुंधियां रही थी।'' जिस तीव्रता से योग्यता रखने वाले जयन्ती महापात्र जैसे युवा विदेशों में अपनी सेवायें दे रहे है। वह वापस अपने देश लौट कर नहीं आना चाहते। अपने देश के प्रति विरक्ति का ऐसा भाव किस सफलता एवं स्वार्थपरता की नींव पर आधारित है? यह सोचनीय है। समाज की दिशा एवं दशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते युवाओं का इस प्रकार निरंतर पलायन करना एक गंभीर स्थिति है। यह स्थिति जटिल से जटिलतर होती जा रही है। एक ओर कामकाजी एवं जागरूक स्त्रियां है। दूसरी ओर ऐसी स्त्रियां भी है जो बदलते समय में भी रूढ़िगत विचारों एवं परम्पराओं पर बलि चढ़ा दी जाती है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी ''कुरजा'' बाड़मेर के बीहड़ रेगिस्तानी इलाके पर केन्द्रित है। जहां पुरूष वर्चस्ववादी बर्बर सांमती समाज में एक स्त्री डायन करार कर दिये जाने का श्राप झेलती है। इन परिस्थितियों के पश्चात् भी वह अपने जीवन के इस कठिन एवं भीषण संघर्ष को बडे ही साहस के साथ निभाती है। ''कुरजां'' कहानी की नायिका गांव वालों के जातिवाद, छुआछूत एवं अन्धविश्वास का शिकार होती है। उसे समझदारी सामंतवादी सोच को चुनौती देती है इसके परिणामस्वरूप उसे डायन करार कर गांव के बाहर निकाल दिया जाता हैं अकेली स्त्री का संघर्ष आसान नहीं होता उस प रवह अगर मां भी हो तो उसके लिए स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण हो जाती है। कहानी की नायिका का पुलिस एवं बी.एस.एफ. के संदर्भ में बयान अनेक कड़वे सत्य उजागर करता है जो दृष्टव्य है– ''अकेली औरत गोश्त की भुनी हुई नमकीन बोटी से ज्यादा क्या होती है। मेरे घरवाले को तो जबरदस्ती स्मगलर–जासूस करार कर दिया। ज बवह मरा तो यहीं रावले की बेगारी में है। दरोगा को रपट लिखने को कहा तो वह उल्टा मुझे ही तंग करने लगा।'' अपने अधिकारों एवं स्त्रीत्व के लिए लड़ती कुरजां के रूप के स्त्री की यंत्रणा का बखान इस कहानी में है। सदियों से स्त्री का संग्राम अपने अस्तित्व, अधिकार एवं आत्मसम्मान के लिए होता रहा है। स्त्री को मात्र वस्तु रूप में देखा गया है। आज भी अशिक्षा, गरीबी एवं पुरानी प्रथाओं का हवाला देकर बाल–विवाह जैसी कुप्रथायें फल–फूल रही है। अंधविश्वास की जड़े गरीबी एवं अशिक्षा के कारण फलती–फूलती है। यही गरीबी अशिक्षा का मुख्य कारण बनती है। यह दोनों मिलकर समाज को वही जड़ परम्पराओं तक सीमित रहने को मजबूर करती है। एक बंजारन औरत जो जड़ी–बूटी की जानकारी रखती है। उसकी यह योग्यता उसकी प्रसिद्धि का कारण बनती है। नायिका की बढ़ती प्रसिद्धि पुरूषवादी सोच को स्वीकार्य कैसे हो सकती है? जिसका परिणाम उसके पति की हत्या और उसे ''डायन'' घोषित कर दिया जाता है। अनपढ़ एवं गरीब समाज को उसके डायन होने का विश्वास भी दिला जाता है। गांव में होने वाली प्रत्येक दुर्घटना का कारण यह ''कुरजां'' ही मानी जाती है। चाहे सरकारी तन्त्र की अनदेखी हो अथवा गांव के मालिकों की निष्क्रियता हो सभी परिस्थितियों का कारण निर्वासित कुरजां को ही माना जाता है। यह कहानी कुरजां द्वारा ऐसी परिस्थिति में न टूटना, साहस एवं बहादुरी के साथ प्रशासन एवं गांव के तथाकथित मालिकों से उसका संघर्ष कई मायनों में स्त्री दशा का वास्तविक चित्रण है। स्त्री जीवन में अनेक ऐसे गांव है जहां ऐसी घटनायें अखबारों एवं समाचार में देखने एवं सुनने में आती रहती है। कई स्त्रियां संघर्ष की जीवटता दिखाती है तो कई इन दकियानूसी प्रथाओं एवं परमपराओं की भेंट चढ़ा दी जाती है।

प्रत्यक्षा की कहानियां विमर्शीय धरातल पर देखने पर निराश नहीं करती है। स्त्रियों के विविध पक्षों की पड़ताल करती कहानियों में प्रत्यक्षा की कहानी ''फुलवरिया मिसराइन'' ऐसी स्त्री के जीवन की व्यथा–कथा को उकेरती है जो विवाह परम्परा की जड़ों से मजबूती से बंधे हुए है। फुलवरिया को उसके पति द्वारा त्याग दिया गया है। वह अकेली जीवन व्यतीत कर रही है। इस संदर्भ में लेखिका लिखती है कि, ''फुलवरिया के अलबत्ता कोई पति नहीं था। माने अब नहीं था। न अब भी सही नहीं कहा था। तो पति नाम का जीव पर इस विशाल संसार के किस कोने में बिला गया था, ये फुलवरिया को पति नहीं था।'' पति के अभाव में फुलवरिया का श्रृंगार करना समाज की उन मान्यताओं को स्पष्ट रूप से नकारना है जो पति के अभाव में इसका विरोध करती है। पति रामावतार के चले जाने के पश्चात् ''पति से त्यक्ता होकर फुलवरिया ने गृहस्थी संभाली। पन्द्रह साल की ठछः साल रज्जू को संभाला, ससुर को संभाला और फूलपुर किराना स्टोर को संभाला सिर्फ संभाला ही नहीं बखूबी संभाला।''

स्त्रियों की स्वतंत्रता का जो शोर निरंतर मच रहा है। साथ ही जिन सांस्कृतिक खतरों का भय दिखलाया जा रहा है। वह सब मात्र कागज तक सीमित है। इन कहानियों में एक ओर स्त्रियों को घुटते–सिसकते एवं उसके संघर्षों का अंकन किया जा रहा है। दूसरी और विवाह संस्था को नकार कर स्त्रियां ऐसी संबंधों में अपनी स्वतंत्रता ढूंढ रही है। सदियों से चली आ रही स्त्री शोषण की मानसिकता पर आज के ऐसे संबंध उसकी स्वतंत्रता एवं उसके बदलते वातावरण का आकलन करती अनेक कहानियां लिखी जा रही है। इसी प्रकार स्त्री की बदलती स्थितियों के बीच आकांक्षा पारे की कहानी ''तीन सहेलियां, तीन प्रेमी, प्रेम, स्वतंत्रता एवं स्त्री पुरूष संबंधों की पड़ताल करती है। कहानी में तीनों सहेलियों यके प्रेमी विवाहित है। उन्हें विवाहेत्तर संबंधों से कोई गुरेज नहीं है। क्योंकि उन्हें उम्र के इस पड़ाव पर कुंवारे लड़के मिलने की संभावना नहीं लगती है। इस संदर्भ में एक सहेली कहती है, ''समझने की कोशिश करो बच्ची, हम जिंदगी मांग रही है। उनकी जिंदगी। सामाजिक जिंदगी, आर्थिक जिंदगी, इज्जत की जिंदगी। वह जिंदगी हमें कोई क्यों देगा। इसलिए नहीं कि, हम काबिल नहीं हैं..... हिस्सा बन सकते हैं न ही हिस्सेदार।'' देह की आवश्यकता उम्र देखकर नहीं आती है। कहानी में तीनों सहेलियां एकाकीपन की ऊब एवं घुटन से भरी हुई है। यह कहानी संबंधों के अलग–अलग चेहरों के दर्शन कराती है। हमारे समाज में अपनी शर्तों पर जीवन जीने की विचारधारा का परिणाम इस प्रकार के संबंधों के रूप में आ रहा है।

हमारे समाज में स्त्री शोषण का एक घृणित अध्याय विधवा महिलाओं के प्रति भी लिखा गया है। शोषण, भेदभाव एवं अनेक समस्याओं का सामना विधवाओं को करना पड़ता है। विधवा महिलायें मारपीट, भावात्मक उपेक्षा, लैंगिक दुर्व्यव्हार, यौन–शोषण, सम्पत्ति के हिस्से से वंचित आदि का शिकार होती है। युवा विधवाओं को अधेड़ विधवाओं की तुलना में अधिक शोषण एवं उत्पीड़न को सहन करना पड़ता है। विधवा स्त्री की विवशता एवं उनके साथ होने वाले शोषण के अनेक चित्र मनीषा कुलश्रेष्ठ ने कहानी ''रंग–रूप–रस–गन्ध'' में उकेरा है। यह कहानी वृन्दावन में रहने वाली विधवा स्त्रियों पर केन्द्रित है। विधवाओं में चलने वाले शोषण और उत्पीड़न को उजागर किया गया है। विधवाओं की स्थिति को चित्रित करते हुए लेखिका लिखती है कि, ''दस बरस की थी तब शादी हुई, तेरह पर गौना हुआ। पन्द्रह लगते–लगते विधवा हो गयी। एक दिन घनी कलेश के बाद, हाथ का शाखा–पोला बेचकर, एक बुढ़िया विधवा के साथ वह वृन्दावन चली आयी।''

इसके अतिरिक्त वंदना राग की कहानी ''यूटोपिया'' में साम्प्रदायिकता जैसे विषय को उठाया गया है। घृणा, द्वेष का मुख्य रूप से स्त्री ही शिकार बनती है। इस कहानी में बलात्कार जैसे विषय को गंभीरता से उठाया गया है। प्रत्यक्षा की कहानी ''सीढ़ियों के पास वाला कमरा'' परित्यक्त स्त्री की वेदना, मनोदशा एवं उनकी अन्य समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करती है। युवा कहानीकार कविता की कहानी ''नदी जो अब भी बहती है.'' मैं भ्रूण हत्या जैसे विषय को आधार बनाया गया है। इस कहानी में मातृत्व के नये आयाम का अनुभव संसार विद्यमान है।

अतः युवा लेखिकाओं ने कहानियों गांवों से लेकर महानगरों तक की स्त्री जीवन का यथार्थ अंकन किया गया है। स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को स्त्री लेखिकाओं ने बड़ी ही कुशलता एवं परिपक्वता के साथ उकेरा है। यह लेखिकाओं समय की बदलती घटनाओं में स्त्री जीवन की बदलती भूमिका का विश्लेषण भी करती है। समाज के घृणित रूप को उजागर करने के साथ स्त्री जीवन की संवेदनाओं को भी व्यक्त करने में सफल होती दिखाई देती है। आज के समय में कहानी अनुगामी विधा बनकर उभर रही है। लम्बी कहानियों की बात हो अथवा छोटी कहानी में सभी पक्षों को समेटने की कला की बात हो, दोनों स्तरों पर यह लेखिकायें खरी उतरती दिखाई देती है। नीलाक्षी सिंह की लम्बी कहानियां जिस प्रकार से प्रभावशाली होती है ठीक उसी प्रकार प्रत्यक्षा की छोटी कहानियों स्त्री जीवन की विविध छटा बिखरी रहती है। शब्दों के चयन की बात हो, अथवा कहानी में रोचकता एवं पठनीयता को बनाये रखने की चुनौती का प्रश्न हो, दोनों ही रूपों में युवा लेखिकाओं ने अपनी योग्यता प्रमाणित की है।

संदर्भ ग्रंथ

1. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियां, पृष्ठ–8
2. कविता, उलटबांसी, पृष्ठ–16
3. वही, पृष्ठ–16
4. नीलाक्षी सिंह, परिन्दे का इंतजार सा कुछ, पृष्ठ–10
5. अल्पना मिश्र, छावनी में बेघर, पृष्ठ–122
6. वही, पृष्ठ–122
7. पंखुरी सिन्हा, किस्सा–ए–कोहनूर, पृष्ठ–134
8. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियां, पृष्ठ–108
9. प्रत्यक्षा, जंगल का जादू तिल–तिल, पृष्ठ–126
10. वही, पृष्ठ–131
11. हिन्दी कहानी युवा परिदृश्य, संपादक–सुशील सिव्द्धार्थ, अंक–3, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ–85
12. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियां, पृष्ठ–41